इकाई 4 एशिया की व्यापारिक गतिविधियाँ और पुर्तगालियों का आगमन

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- यूरोप और एशिया के बीच समुद्र मार्ग से आवागमन शुरू होने के महत्व को रेखांकित कर सकेंगे,
- इस काल में समुद्री मार्ग पर पुर्तगालियों के वर्चस्व पर प्रकाश डाल सकेंगे,
- यह बता सकेंगे कि पुर्तगालियों द्वारा शुरू किए गए व्यापार और वाणिज्य का यूरोपीय शक्तियों ने किस प्रकार अनुगमन किया, और
- इस काल में आयात-निर्यात की जा रही प्रमुख वस्तुओं के बारे में जान सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

पिछली इकाइयों (2 और 3) में हमने उत्तर तथा दक्खन और दक्षिण भारत की राज्य व्यवस्था और अर्थव्यवस्था का अध्ययन किया है। इस इकाई में हम समुद्री मार्ग से होने वाली व्यापारिक गतिविधियों की

प्रकृति पर विचार-विमर्श करेंगे। भारत का व्यापारिक संबंध दूर-दूर तक था। दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों और पश्चिम एशिया के विभिन्न भागों से भारत के व्यापारिक संबंध थे। परन्तु यूरोपीय देशों, खासकर अटलांटिक सागर पर बसे देशों, के साथ सीधा समुद्री व्यापार नहीं होता था। 1510 में गोवा पर आधिपत्य स्थापित करने के बाद पुर्तगाली भारतीय समुद्र क्षेत्र में प्रमुख नौ शक्ति के रूप में उभरे (विस्तृत अध्ययन के लिए देखिए ऐच्छिक पाठ्यक्रम-03, खंड-7)।

पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य लाल सागर क्षेत्र से चीनी और अल-करीमी व्यापारी भारत के विभिन्न व्यापारिक केन्द्रों में अक्सर आया करते थे। इसके बाद भारत के अंतर्राष्ट्रीय समुद्री व्यापार में कुछ समय के लिए ठहराव आ गया। इसी समय 1453 में कुस्तुनतुनिया (कांस्टैन्टिनोपल) पर तुर्कों के आधिपत्य से पूर्व और पश्चिम को जोड़ने वाला मार्ग बाधित हुआ, इस कारण यूरोपवासी पूर्व के साथ व्यापार करने के लिए वैकल्पिक मार्ग खोजने लगे (इस मत को लेकर विद्वानों के बीच मतैक्य नहीं है)। इसी समय पुर्तगाली नाविकों ने समुद्री व्यापार से ज्यादा से ज्यादा फायदा उठाने के लिए व्यवस्थित ढंग से तैयारियाँ शुरू कर दीं। उन्होंने मानचित्र बनाने की कला और जहाजरानी के क्षेत्र में अभूतपूर्व सफलता अर्जित की। वास्कोडिगामा की प्रारंभिक सफलताओं के बाद पुर्तगालियों ने एशिया और खासकर भारत की वाणिज्यिक क्षमताओं का भरपूर उपयोग करने के लिए योजनाबद्ध ढंग से प्रयास किए। स्थानीय शासकों ने व्यापार और वाणिज्य के विकास के लिए कारखाने और अन्य सुविधाओं की स्थापना की अनुमति दे दी। कहीं-कहीं किले भी बनाए गये। इसके साथ-साथ उन्होंने इसाई धर्म के प्रचार का भी काम शुरू किया। विवाह, धर्म परिवर्तन और यूरोपीयों के बसने से एक नये सामाजिक समूह का उदय हुआ। स्थानीय शासकों ने पुर्तगालियों के साथ राजनीतिक और वाणिज्यिक संधियां कीं। इस काल के दौरान पुर्तगाली भारत के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित करने वाले प्रथम यूरोपवासी थे। पुर्तगालियों को देखकर कई यूरोपीय देश एशिया की व्यापारिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रेरित हुए।

इस इकाई में उपरोक्त पृष्ठभूमि में एशिया में पुर्तगालियों की व्यापारिक गतिविधियों की चर्चा की जा रही है। इसके साथ-साथ 1500 से 1600 के बीच भारतीय उपमहाद्वीप में समाज के विभिन्न वर्गों के साथ उनके आपसी आदान-प्रदान की भी चर्चा की जाएगी। समग्र रूप में एशिया के साथ पुर्तगालियों के व्यापारिक संबंधों के आर्थिक परिणामों की चर्चा की जाएगी।

4.2 कारखाने, किले और वाणिज्यिक व्यवस्थाएँ

काहिरा और अलेक्ज़ेन्ड्रिया में व्यापार और वाणिज्य को सुचारू ढंग से चलाने के लिए इतालवी व्यापारियों ने भण्डारगृहों (कारखानों) की स्थापना की। इसकी नकल करते हुए पुर्तगालियों ने भी भारत और एशिया के विभिन्न स्थानों के तटीय प्रदेशों में कारखानों की स्थापना की। इन यूरोपीय कारखानों को ऐसे वाणिज्यिक संगठन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिनका किसी देश-विशेष में स्वायत्त अस्तित्व होता था। इनकी स्थापना उसी देश में की जाती थी जिसके साथ वाणिज्यिक संबंध हुआ करता था। प्रत्येक कारखाने में एक कारखानेदार हुआ करता था। कारखानादार कारखाने का सर्वोच्च अधिकारी हुआ करता था। उसकी सहायता के लिए कई लोग होते थे, जिनकी नियुक्ति पुर्तगाली सम्राट किया करता था। कारखानादार सम्राट का प्रतिनिधि होता था। उसका कार्य सभी प्रकार की आर्थिक, वित्तीय और प्रशासनिक गतिविधियों को बढ़ावा देना था। सभी मामलों में वह पुर्तगाली राष्ट्रीय हितों का सबसे ज्यादा ध्यान रखता था। दुश्मनों से कारखाने की रक्षा भी की जानी थी अतः अपनी शक्ति को मजबूत और सुदृढ़ बनाने के लिए पुर्तगालियों ने कारखानों को किलाबंद करना शुरू कर दिया। पुर्तगालियों के समुद्री व्यापार की सहायता के लिए कई कारखाने और किले निर्मित किए गए। पुर्तगाली किलाबंद केन्द्रों का उपयोग दूसरों के जहाजों को आने से रोकने के लिए किया करते थे। इसके अतिरिक्त यह क्षेत्र सेना और नौ सेना के लिए आरक्षित थे। सोलहवीं शताब्दी से लेकर अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक वाणिज्यिक गतिविधियों में कारखाना व्यवस्था की प्रमुख भूमिका रही। आइए, विभिन्न प्रांतों में पुर्तगालियों द्वारा स्थापित कारखानों के बारे में संक्षेप में चर्चा करें।

पश्चिम भारत

मालाबार क्षेत्र में सबसे पहले 1500 में पुर्तगालियों ने कालीकट में अपना कारखाना लगाया। हालांकि यह ज्यादा दिन तक नहीं टिक पाया (इकाई 3 में आपने पढ़ा है कि मालाबार में पुर्तगाली सत्ता की स्थापना में कालीकट का जमोरिन शासक बड़ी बाधा सिद्ध हुआ। वहां ज़मोरिनों ने पुर्तगालियों को अपने कारखाने को किलेबंद भी नहीं करने दिया। अंततः 1525 में पुर्तगालियों ने कालीकट में कारखाने के निर्माण का विचार छोड़ दिया। हालांकि मालाबार तट पर बसे कोचीन (1501), कैन्नानोर (1503), क्वीलोन (1503), चलियम (1531), रचोल (1535), क्रेंगानोर (1536), मैंगलोर और होनावर (1568) तथा भतकल में पुर्तगालियों ने अपने कारखाने स्थापित किए। धीरे-धीरे इन सभी कारखानों को किलाबंद कर दिया गया। सोलहवीं शताब्दी के दूसरे दशक में अहमदनगर के निज़ाम-उल-मुल्क ने भी पुर्तगालियों को चौल में कारखाने की स्थापना की इजाजत दे दी।

उत्तर-पश्चिम में, मलक्का, और कालीकट के बीच खम्बायत (कैम्बे) एक प्रमुख पड़ावी बंदरगाह था। यह लाल सागर और फारस की खाड़ी को भूमध्य सागर के बंदरगाहों के साथ भी जोड़ता था। खम्बायत के अतिरिक्त पुर्तगालियों ने अपने कारखाने दीव (1509, 1538), बेसीन (1534), सूरत, दमन (1599) और भावनगर में स्थापित किए। इस प्रकार मालाबार, कोंकण और उत्तर-पश्चिम भारत के सारे तटीय इलाके पुर्तगालियों के प्रभाव-क्षेत्र में आ गये।

पूर्वी भारत

मलक्का पर कब्जा होने और वहां पुर्तगाली बस्ती बसने के साथ भारत के पूर्वी तट से सीधा संपर्क स्थापित हुआ। पूर्वी भारत में पुर्तगालियों का संपर्क ऐसे व्यापारियों से हुआ जो मलक्का और अन्य दक्षिण-पूर्व एशियाई केन्द्रों से व्यापार करते थे। कोरोमण्डल तट पर बसे मसूलीपट्टम, पूलीकट, सैन थोम, पांडिचेरी, कुड्डालोर, पोर्टो नोवो, नागापट्टम आदि जैसे तटीय शहरों से पुर्तगाली कपड़ा और अन्य वस्तुएँ इकट्ठा करते थे। पोर्टो नोवो, मलक्का, मनीला और पूर्व के अन्य क्षेत्रों से व्यापार करने के लिए नागापट्टम पुर्तगालियों का एक प्रमुख बंदरगाह था।

नागापट्टम के उत्तर में स्थित सैन थौम (मेलपुर) में भी पुर्तगालियों की बस्ती थी। यह बस्ती दीवार से घिरी थी। 1518 में श्रीलंका के पश्चिमी तट पर स्थित मनार में भी पुर्तगालियों ने एक किला बनाया। हालांकि यह किला भारतीय भूभाग पर स्थित नहीं था, पर यहां से इस उपमहाद्वीप के पश्चिम से पूर्व की ओर जाने वाले जहाजों को नियंत्रित किया जा सकता था।

1517 ई. के बाद पुर्तगालियों ने बंगाल से भी वाणिज्यिक संपर्क स्थापित किया। सबसे पहले इस काल के बंगाल के प्रमुख बंदरगाह चटगाँव पर कारखाना खोलने का प्रयत्न किया गया। काफी आग्रह के बाद 1536 में बंगाल में राजा महमूद शाह ने उन्हें चटगाँव और सतगाँव में कारखाना स्थापित करने की इजाजत दे दी। अकबर ने 1579-80 में पुर्तगालियों को हुगली में दूसरी बस्ती बसाने की इजाजत दे दी। 1633 में शाहजहां के **फरमान** से बंदेल में तीसरा कारखाना खुला। पर सोलहवीं शताब्दी के दौरान पश्चिमी तट की तरह पूर्वी तट पर कोई किलाबंदी नहीं की जा सकी। पर इन बस्तियों में अस्त्र-शस्त्र रखे जाते थे और यहां से सामान ले जाते जहाजों पर निगरानी रखी जाती थी।

दक्षिण पूर्व एशिया

भारतीय समुद्री क्षेत्र के व्यापार पर एकाधिकार स्थापित करने के लिए पुर्तगालियों ने दक्षिण-पूर्व एशिया के महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्रों पर नियंत्रण स्थापित करना जरूरी समझा। समुद्री व्यापार के प्रमुख केन्द्र मलक्का पर उनकी नजर थी और 1511 में उन्होंने इस पर अधिकार जमा लिया। उन्होंने कोलम्बो, बट्टिकोला जाफनापट्टम आदि (सभी श्रीलंका में) में नये किले स्थापित किए। इसी के साथ—जावा, स्याम, मलक्का, मर्तबन और पेगू से संपर्क स्थापित किया गया। 1518 से पुर्तगालियों ने चीन के संचाओ द्वीप पर बस्ती बसानी शुरू की। यहीं 1552 ई. में प्रसिद्ध इसाई धर्म प्रचारक सेंट फ्राँसिस जेवियर की मृत्यु हुई थी।
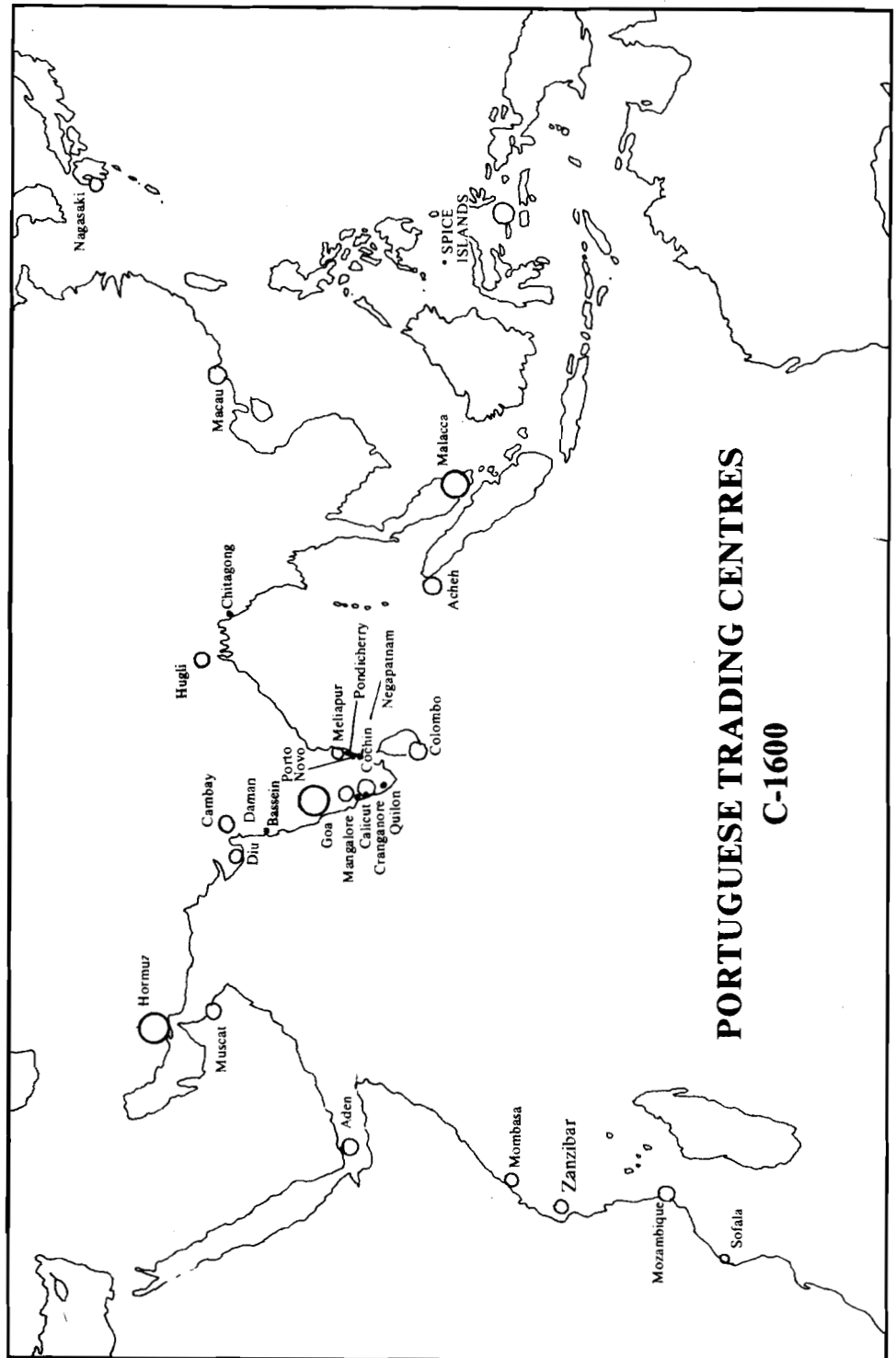
Hormuz
Muscat
Aden
Cambay
Diu
Daman
Bassein
Goa
Mangalore
Calicut
Cranganore
Quilon
Porto
Novo
Meliapur
Pondicherry
Cochin
Negapatnam
Colombo
Hugli
Chitagong
Acheh
Malacca
Macau
Nagasaki
SPICE
ISLANDS
Mombasa
Zanzibar
Mozambique
Sofala
PORTUGUESE TRADING CENTRES
C-1600

बोध प्रश्न 1

1) 16वीं-18वीं शताब्दी में व्यापार और वाणिज्य के परिप्रेक्ष्य में कारखाना का क्या अर्थ था? इसकी क्या भूमिका थी?

....

....

....

....

....

....

2) कारखानों की किलाबंदी की क्या आवश्यकता थी?

....

....

....

....

....

....

3) भारत में पुर्तगालियों की घुसपैठ किस प्रकार हुई?

....

....

....

....

....

....

4.3 निर्यात और आयात की वस्तुएँ

पुर्तगालियों ने पूर्वी देशों के साथ समुद्री रास्ते से व्यापार करना शुरू किया। उनका मूल उद्देश्य उत्पादन के क्षेत्रों से सीधे मसाले प्राप्त करना था। अभी तक उन्हें इतालवी या मुसलमान व्यापारियों से इसे खरीदना पड़ता था। यूरोपीय भोजन में काली मिर्च का उपयोग खूब होने लगा था। खासकर मांस को ज्यादा देर तक टिकाए रखने के लिए काली मिर्च की मांग बढ़ी। अदरक दालचीनी, इलाइची, जावित्री, जायफल और पूर्व की कई वनस्पतियों की यूरोपीय बाजार में खूब मांग थी। इसके अतिरिक्त मलमल, छींट के कपड़े तथा हाथी आदि की पुर्तगाल में खूब मांग थी।

पुर्तगालियों के पास कोई ऐसी वस्तु नही थी जिससे वे पूर्व की इन चीजों से आदान-प्रदान कर सकें। पूर्वी कुलीन तंत्र के बीच उनकी वस्तुओं की कुछ मांग थी पर यह काफी कम थी। अतः पूर्व से वस्तुओं की खरीद के लिए व्यापारी पश्चिम से सोना, चांदी और अन्य बहुमूल्य रत्न लाया करते थे।

4.3.1 मालाबार और कोंकण तट

मालाबार और कोंकण से सबसे ज्यादा काली मिर्च का निर्यात होता था। आरंभ में मालाबार की काली मिर्च मलक्का, जावा और कनारा की काली मिर्च से बेहतर मानी जाती थी। सोलहवीं शताब्दी के अंत और

सत्रहवीं शताब्दी के आरंभ में कनारा से पहले से ज्यादा काली मिर्च का निर्यात होने लगा। ऐसा माना जाता है कि सोलहवीं शताब्दी के प्रथम दशक में पुर्तगालियों ने मालाबार से लिस्बन को 25000 से 30000 क्विंटल मसाले (सभी प्रकार के) निर्यात किये थे। शताब्दी के अंत में ठेकेदारों के लिए मालाबार से लिस्बन को 30000 क्विंटल काली मिर्च के निर्यात का लक्ष्य रखा गया। सोलहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के आंकड़ों को देखने से पता चलता है कि 1546 में मालाबार और कोकण तट से 36,664 क्विंटल काली मिर्च पुर्तगाल को निर्यात की गई।

मालाबार से निर्यात की जाने वाली प्रमुख वस्तु अदरक थी। इसे सुखाकर भी निर्यात किया जाता था। मालाबार से दालचीनी का भी व्यापार होता था, पर यह श्रीलंका की दालचीनी से बेहतर नहीं थी। मालाबार तट से सफेद और लाल चंदन की लकड़ी भी पुर्तगाल को निर्यात की जाती थी। इनके अतिरिक्त मालाबार, दाबुल, विजयनगर और समग्र रूप में दक्खन से सभी प्रकार के हरड़ (myrobalans) निर्यात किए जाते थे। इसी प्रकार मालाबार और कोंकण तट से पुर्तगाल को अलग-अलग मात्रा में लाख, नील, जटामांसी (spikenard), इमली, सुपारी, कपड़े, हाथी दांत और हल्दी निर्यात किए जाते थे। दालों का भी निर्यात किया जाता था।

1498 में कालीकट के ज़मोरिन ने वास्कोडिगामा से जो निवेदन किया या उससे मालाबार और कोंकण तट पर आयातित वस्तुओं का पता चलता है। उससे सोना, चांदी, मूंगा और सिंदूरी रंग (scarlet) के लिए आग्रह किया गया था। गोवा के गवर्नर अफोन्सो डि अलबुकर्क ने 1513 में पुर्तगाल के राजा को उन वस्तुओं की सूची दी थी जिन्हें भारत में बेचा जा सकता था। इन वस्तुओं में मूंगा, तांबा, पारा, सिंदूर, जरी, मखमल, कालीन, गेरूआ रंग, गुलाब-जल और विभिन्न प्रकार के कपड़े शामिल थे। ये सभी वस्तुएं पुर्तगाल में नहीं मिलती थीं, लेकिन पुर्तगाली इन्हें फ्लैन्डर्स, ज़र्मनी, इंग्लैंड और अन्य यूरोपीय देशों से प्राप्त करते थे। उदाहरण के लिए, डेमारक, बूटेदार कपड़ा, सीसा, हिंगुल (cinnabar), सोफाला से सोना, फ्रांसीसी और अंग्रेजी लिनन (एक प्रकार का चमकीला कपड़ा) के कपड़े, फिटकरी-पत्थर, टिन, अफीम, इस्पात, जेनेवा का मखमल, फ्लोरेंस का सिंदूरी रंग, लंदन से लाल कपड़ा, हॉलैंड से मूंगा, आदि भारत में लाये जाते थे। कई प्रकार के ढाले हुए सिक्के भी आयातित होते थे। यह सब भारत में पुर्तगालियों के वाणिज्यिक-मुख्यालय कोचीन लाया जाता था। यहीं से इन वस्तुओं को भारत के विभिन्न भागों में भेजा जाता था। गोवा के मुख्यालय बनने के बाद पुर्तगाली सोना, चांदी जैसी बहुमुल्य वस्तुएँ और नगदी अपने साथ गोवा ले गये और वितरण का कार्य वहीं से करने लगे।

4.3.2 उत्तर-पश्चिमी भारत

उत्तर-पश्चिमी भारत से पुर्तगाल को निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में नील, कई प्रकार के कपड़े, रेशम, कछुए के खोल से बने हस्तशिल्प आदि कुछ महंगी वस्तुए थीं। टाफ्टा (एक प्रकार का कपड़ा) भी निर्यात की जाने वाली महंगी वस्तु थी। साटन, चिंट्स, मलमल, धारीदार सूती कपड़ा, कैम्ब्रिक-मलमल, रेशम के रूमाल, गोलकुंडा मलमल और चौल, दभोल तथा गुजरात के तट पर उपलब्ध विभिन्न प्रकार के रेशमी उत्पादों का निर्यात पुर्तगाल को किया जाता था। इनमें रेशम का उत्पादन बुरहानपुर और बालघाट में होता था। चिंट्स, कैम्बे में बनता था, और दमन के आसपास के इलाके में सूती कपड़ा बनता था। सत्रहवीं शताब्दी के दौरान कपड़े के उत्पादन में वृद्धि हुई। उत्तर-पश्चिम तट पर तांबा, चौड़े पाट वाले कपड़े और विभिन्न तरीके से नकद धन का आयात हुआ। इसके अतिरिक्त दक्षिण भारत से कपड़ों के बदले काली मिर्च और मसाले भी उत्तर-पश्चिमी तट पर पहुँचे।

4.3.3 पूर्वी तट

भारत के पूर्वी तट से मुख्य रूप से विभिन्न प्रकार के कपड़ों का निर्यात होता था। कोरोमंडल तट से पुर्तगालियों को चंदन की लकड़ी भी निर्यात की जाती थी। जटामांसी (spikenard) बंगाल में उपजाया जाता था और इसे पुर्तगाल को निर्यात करने के लिए कोचीन लाया जाता था। इस इलाके से निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में मोती सबसे महंगी वस्तु थी। यह मुख्य रूप से उस तट से जहाँ मोती वाले सीपी हों प्राप्त किया जाता था। बंगाल से पुर्तगाल जाने वाली वस्तुओं में सूती और रेशमी वस्त्र तथा कढ़ाई वाले वस्त्र का महत्वपूर्ण स्थान था। सूखा अदरक, हरड़ (myrobalans), मक्खन, तेल, मोम और चावल भी बंगाल से प्राप्त किए जाते थे।

पुर्तगाली जरीदार कपड़ा, बूटेदार कपड़ा, साटन का कपड़ा, टाफ्टा, लौंग, जायफल जावित्री, कपूर, दालचीनी, काली मिर्च, संदूक, लिखने का डेस्क, अमूल्य मोती और गहने बंगाल में व्यापार के लिये लाए। ये सब वस्तुएं मलक्का, चीन, बोर्नियो, श्रीलंका और मालाबार तट से लायी गयीं। पुर्तगाली मालदीव से कौड़ियाँ सोलोर और तिमोर से सफेद और लाल चंदन की लकड़ी भी बंगाल तक ले गये।

4.3.4 दक्षिण-पूर्व एशिया

कई प्रकार के मसाले दक्षिण-पूर्व प्रदेशों और श्रीलंका से इकट्ठे किए जाते थे: जैसे, मलक्का और जावा से काली मिर्च प्राप्त की जाती थी। मलक्का में अच्छी कोटि का लौंग उपजाया जाता था। श्रीलंका से श्रेष्ठ दालचीनी प्राप्त कर लिस्बन भेजी जाती थी। तीमोर और तेन्नासेरिम में अच्छी चंदन की लकड़ी पायी जाती थी जिसकी लिस्बन में मांग थी। सुमात्रा से लाख भेजा जाता था। बोर्नियो, सुमात्रा, पासेम और चीन से अच्छी कोटि का कपूर लिस्बन भेजा जाता था। पुर्तगाली पेगू से बैन्जोइन अपने देश ले जाते थे। पुर्तगाली चीन से रेबंदचीनी (rhubarb) और पेगू से कस्तूरी ले जाते थे।

इसके बदले पुर्तगाली दक्षिण-पूर्व एशियाई क्षेत्र को नगद, धन, चांदी, सोना और कपड़ा देते थे। इनमें से अधिकांश कपड़ा भारत में बना होता था।

बोध प्रश्न 2

1) यूरोपवासी काली मिर्च का आयात करने में रुचि क्यों रखते थे?

....

....

....

....

....

....

2) पुर्तगाल को निर्यात की जाने वाली वस्तुओं का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

....

4.4 पुर्तगाली व्यापार के लिए पूँजी निवेश

1500 से 1506 के बीच पुर्तगालियों ने मालाबार तट से जितना व्यापार किया था उसे आधार बनाकर 1506 में एक इतालवी ने यह अनुमान लगाया था कि पूरे पूर्व के साथ प्रत्येक वर्ष व्यापार करने के लिए 170,000 **डूकाट** की ज़रूरत पड़ेगी। पुर्तगाल का राजा इस राशि का एक चौथाई हिस्सा खर्च करता था, शेष राषि पुर्तगाली राजा के सहयोगी व्यापारियों और पूँजी निवेशकों से प्राप्त की जाती थी। 1500 में उसने एक आदेश द्वारा देशी और विदेशी व्यापारियों को पूर्व की ओर अपना जहाज ले जाने की अनुमति दे दी। युद्ध-लूट, नज़राना और निजी व्यापारियों पर लगाए गए कर से भी भारत के साथ होने वाले व्यापार के लिए धन प्राप्त होता था।

4.4.1 यूरोपीय पूँजी निवेशक

सोलहवीं शताब्दी में इतालवी, खासकर फ्लोरेंस निवासी प्रमुख पूँजी निवेशक के रूप में सामने आये। अधिकांश इतालवी पूँजी निवेशकों ने पुर्तगाली राजाओं के साथ समझौता किया। वे लिस्बन में राजा को नगद धन या वस्तुएँ दिया करते थे। राजा उसका इस्तेमाल भारत से काली मिर्च खरीदने के लिए किया करता था। समझौते के मुताबिक ये वस्तुएं लिस्बन में इन पूँजी निवेशकों को दे दीं जाती थीं। कुछ पूँजी निवेशकों ने अपने प्रतिनिधि भी भारत भेजे। पूर्वी क्षेत्र में पुर्तगाली अधिकारियों की निगरानी में नगद धन या वस्तुएँ भेजी जाती थीं।

भारतीय वस्तुओं की ओर जर्मन पूँजी निवेशकों और व्यापारियों का भी ध्यान आकृष्ट हुआ। पुर्तगाली राजा ने खुले दिल से उनका स्वागत किया क्योंकि अपने बल पर उसे पूर्वी व्यापार को संभालने में कठिनाई हो रही थी। भारत से लाई गयी वस्तुओं, खासकर काली मिर्च और अन्य मसालों का आंशिक रूप में तांबे के माध्मम से भुगतान होता था, अतः तांबे की बड़ी मात्रा में आवश्यकता होती थी। यूरोप में फूगर जैसे कुछ जर्मन व्यापारी पूँजी निवेशकों का तांबे के उत्पादन पर एकाधिकार था। इससे भारत से व्यापार करने में काफी सुविधा हो गयी। अब जर्मन पूँजी निवेशक लिस्बन स्थित भारतीय केंद्र को अपना जहाज, धन और वस्तुएं सौंप दिया करते थे। ये वस्तुएं पुर्तगाली झंडे के नीचे भारत में लायी जाती थीं और वहाँ से लायी वस्तुएं समझौते की शर्तों के अनुसार लिस्बन में पूँजी निवेशकों को बेच दी जाती थीं।

सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में वैलसर और फूगर ने गिराल्डो पेरिस और युआन बैतिस्ता रोवालेस्को ने एक व्यापार-संघ बनाया और 30,000 क्विंटल काली मिर्च सीधे भारत से खरीदने और भारत को प्रतिवर्ष 170,000 **क्रूसेडो** भेजने का समझौता किया। इस प्रकार वैलसर और फूगर की फर्में लगातार भारत के व्यापार से जुड़ी रहीं। फूगर के अलावा हरवार्ट और इम्होफ की फर्में भी विजयनगर से हीरे और अन्य मूल्यवान पत्थरों का व्यापार करती थीं।

सोलहवीं शताब्दी में कुछ ही पुर्तगाली व्यापारी ऐसे थे जिन्होंने अपने बल पर भारत के साथ व्यापार किया। भारत में नियुक्त राज्य के अधिकारियों को भी भारत के साथ व्यापार करने की इजाज़त थी। पदानुक्रम में अपने पद के अनुसार उन्हें नगद राशि के बदले भारतीय वस्तुएं पुर्तगाल ले जाने का कुछ अधिकार प्राप्त था। उनके नियुक्ति पत्र में इन सेवा-शर्तों का उल्लेख कर दिया जाता था।

4.4.2 भारतीय व्यापारी और शासक

कई बार पुर्तगालियों के पास नगद धन या वस्तु विनियम के लिए कोई वस्तु नहीं होती थी तो भारतीय व्यापारी उन्हें उधार में सामान दे देते थे। कोचीन के व्यापारी खासकर मरक्कारों ने इस ढंग से पुर्तगालियों की काफी सहायता की और इसके लिए पुर्तगाली अधिकारी उनका आभार मानते थे। कभी-कभी पुर्तगाली राजा से ऐसे व्यापारियों को रियायत देने को भी सिफारिश की गई। बीजापुर राजदरबार से पद मुक्त होने के बाद ख्वाजा शमसुद्दीन गिलानी कैन्नासौर में आकर बस गया था। वह पुर्तगालियों को ऋण दिया करता था।

कुछ स्थानीय राजाओं ने पुर्तगालियों की जमानत भी भरी। जब पुर्तगालियों के पास माल खरीदने के लिए पैसा नहीं होता था, तो ये राजा व्यापारियों से धन दिलाया करते थे। उदाहरण के लिए, कोचीन के राजा ने इस प्रकार कई बार पुर्तगालियों के लिए ऋण उपलब्ध करवाकर सहायता की। हिंद महासागर और अरब सागर में चलने वाले पुर्तगाली जहाज अस्त्र-शस्त्र से सजे होते थे। पुर्तगालियों से आज्ञा पत्र (cartaz) लिए बिना अगर कोई जहाज सामान ढ़ोने की कोशिश करता था, तो उसे जब्त कर लिया जाता था (अधिक विस्तार के लिए ऐच्छिक पाठ्क्रम-3, इकाई-21, उपभाग 21.4.1 देखिए)। इस प्रकार की लूट से भी काफी धन इकट्ठा होता था जिसे पुनः व्यापार में निवेशित किया जाता था। पुर्तगालियों ने पराजित राजाओं को नगद या वस्तु के रूप में नजराना देने के लिए बाध्य किया। निवेश के लिए कई बार उनके द्वारा इस स्रोत का भी इस्तेमाल किया गया। भारत के किसी भाग में या एशिया के किसी देश में जहाज भेजने के लिए व्यक्तियों को पुर्तगालियों से आज्ञा-पत्र लेना होता था, जिसके लिए वे शुल्क वसूल करते थे। हालांकि यह अपने आप में नगण्य था, पर ऐसे जहाजों को भारत के बंदरगाहों पर बने पुर्तगाली सीमा शुल्क कार्यालय में हाजिरी देनी होती थी और कर अदा करना पड़ता था। यह पुर्तगालियों की आय का अन्य स्रोत था। इस प्रकार पुर्तगाली विभिन्न तरीकों से अपने व्यापार के लिए धन इकट्ठा किया करते थे।

4.5 भारत के साथ पुर्तगाली व्यापार की प्रकृति

कालीकट आगमन के समय से ही पुर्तगालियों ने विदेशी और भारतीय सभी व्यापारियों की हिस्सेदारी समाप्त करने और स्वंय के लिए व्यापार के एकाधिकार की मांग की। पुर्तगाली जहाज अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित रहा करते थे और दूसरे व्यापारियों को डरा धमकाकर उनके जहाज और समान जब्त कर लिया करते थे। 1501 तक पुर्तगाली राजा ने हिन्द महासागर क्षेत्र में अपने स्वामित्व की घोषणा कर दी। उसने **इथोपिया, अरब, फारस और भारत के जहाजरानी, वाणिज्य तथा विजयों के शाह** की उपाधि ग्रहण कर ली। 1502 में पुर्तगालियों ने कालीकट क्षेत्र से एकाधिकार व्यापार करने की मांग की जिसे कालीकट के जमोरिन राजा ने अस्वीकार कर दिया। इसके बाद वास्कोडिगामा ने अरब सागर और हिन्द महासागर में चलने वाले सभी जहाजों के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। उसने एक आदेश जारी किया जिसके अनुसार पुर्तगालियों से आज्ञा-प्राप्त जहाज पर कोई आक्रमण नहीं किया जाना था। यह प्रमाण-पत्र पहली बार 1502 में जारी किया गया।

समुद्री व्यापार में संलग्न सभी भारतीय व्यापारियों और शासकों को पुर्तगालियों से आज्ञा-पत्र लेना पड़ता था। इस प्रकार के आज्ञा-पत्र पर अंकित कर दिया जाता था कि ये जहाज काली मिर्च, घोड़े, अदरक, जहाज में प्रयोग होने वाली नारियल की रस्सी, गंधक, सीसा, शोरा (saltpetre), दालचीनी आदि नहीं लादेंगे। इन जहाजों के मार्गों और गंतव्य स्थान पर भी नियंत्रण लगाया गया। अकबर और उसके उत्तराधिकारियों, अहमदनगर के निजाम शाही शासक, बीजापुर के आदिल शाही शासक, कोचीन के राजा, कालीकट के ज़मोरिन शासकों और कैन्नानो के राजाओं ने अपने जहाजों को विभिन्न जगहों पर भेजने के लिए ऐसे आज्ञा-पत्र पुर्तगालियों से खरीदे थे।

4.5.1 एकाधिकार व्यापार

पन्द्रहवीं शताब्दी के अंत तक विश्व के अनेक हिस्सों से व्यापारी वाणिज्य और व्यापार करने के लिए भारत के तटीय इलाकों में पहुँच चुके थे। 1498 में वास्कोडिगामा ने कालीकट के बंदरगाह पर मक्का, तेनसेरी, पेगू, श्रीलंका, तुर्की, मिश्र, फारस, इथोपिया, ट्यूनिस और भारत के विभिन्न क्षेत्रों के व्यापारियों की उपस्थिति का जिक्र किया है। यह सर्वविदित तथ्य है कि लाल सागर तथा चीन से व्यापारी भारतीय तटों पर अक्सर आया करते थे। ऐसी कोई सूचना नहीं मिलती है कि किसी व्यापारिक समूह ने कभी व्यापार के क्षेत्र में समग्र रूप से एकाधिकार की मांग की हो या किसी एक वस्तु या अनेक वस्तुओं के व्यापार के लिए अपना हक जताया हो। पर पुर्तगालियों के आगमन के बाद यह स्थिति बिल्कुल बदल गयी। राजाओं पर दबाव डाला गया कि वे दूसरे व्यापारियों को उनके बंदरगाह पर व्यापार करने से रोकें। इसी प्रकार कुछ वस्तु विशेष का व्यापार अन्य पुर्तगाली व्यापारियों के अलावा अन्य व्यापारियों के लिए वर्जित कर दिया गया। दूसरे शब्दों में, पुर्तगालियों ने व्यापार के एकाधिकार की मांग की। भारतीय राजाओं के साथ हुई संधियों में इसका विशेषरूप से उल्लेख कर दिया जाता था। एशियाई समुद्र क्षेत्र में अपने एकाधिकार को स्थापित करने के लिए पुर्तगालियों ने सामरिक महत्व के स्थानों पर किले बनाये, अपने जहाजों से आने जाने वाले जहाजों पर निगरानी रखी और दूसरे जहाजों को आज्ञा-पत्र लेने के लिए दबाव डाला।

4.5.2 भारतीय शासकों और व्यापारियों का व्यापार

पुर्तगालियों द्वारा व्यापार पर पूर्ण एकाधिकार स्थपित करने के प्रयत्न के बावजूद भारतीय शासक और व्यापारी व्यापार में भाग लेते रहे। उदाहरण के लिए, कैन्नानोर का राजा पुर्तगालियों से आज्ञा-पत्र लेकर सामान से भरा अपना जहाज कैम्बे और होर्मुज भेजा करता था। पुर्तगालियों का एकाधिकार होने के बावजूद वह इन स्थानों से घोड़े मंगवाया करता था। कभी-कभी इन जहाजों पर पुर्तगालियों द्वारा कब्जा किए जाने का भी खतरा होता था। मालाबार तट पर स्थित तानूर, चाले और कालीकट के राजाओं के साथ भी यही बात थी। पुर्तगालियों के एकाधिकार के बावजूद गुजरात के कुलीन वर्ग अपना व्यापार करते रहे। व्यापार में रुचि रखने वाले मलिक गोपी, मलिक अयाज, ख्वाजा सफर जैसे कुलीन अपने जहाजों के लिए कभी आज्ञा-पत्र लेते थे, कभी नहीं लेते थे। इसके अलावा भारत में बसे स्थानीय और विदेशी व्यापारी भी कभी आज्ञा-पत्र लेते थे कभी नहीं लेते थे। यह अनुमान लगाया गया है कि कालीकट और कन्याकुमारी (केप कोमोरिन) के बीच के इलाके में प्रति वर्ष 60,000 क्विंटल काली मिर्च उगाई जाती थी। इसमें से केवल

15,000 क्विंटल पुर्तगाली कारखाने को सुपुर्द किया गया बाकि तीन चौथाई माल अन्य बंदरगाहों पर ले जाया गया। इसे पुर्तगालियों ने अवैध व्यापार बताया। पुर्तगाली कई दशक बीत जाने के बाद भी 1503 में तय किए काली मिर्च के मूल्य में बढ़ोत्तरी नहीं करना चाहते थे। अतः अब काली मिर्च के उत्पादकों के पास अन्य कोई चारा नहीं रह गया और वे दूसरों को अपना माल बेचने लगे। ये व्यापारी पुर्तगालियों की निगाह से बचकर इसे दूसरे व्यापारिक स्थलों पर भेज दिया करते थे। इसके अलावा अपनी सरकार की निगाह बचाकर कई पुर्तगाली अधिकारी कई वस्तुओं का व्यापार करते थे। वस्तुतः लाल सागर क्षेत्र में पुर्तगाली एकाधिकार में कोई खास दम नही था।

4.5.3 व्यापार और उत्पादन

सोलहवीं शताब्दी के दौरान एशिया और खासकर भारत से होने वाले समुद्री व्यापार में व्यापारियों को काफी लंबी दूरी तय करनी पड़ती थी। एक छोर पर एशिया के बंदरगाह थे और दूसरे छोर पर अटलांटिक महासागर के बंदरगाह थे। भारत से निर्यातित वस्तुएं यूरोप के विभिन्न हिस्सों में पहुंचाई जाती थी। इस काल का व्यापार केवल "फेरी व्यापार" तक ही सीमित नहीं था, बल्कि यह उससे अलग था।

काली मिर्च की भारी मांग को देखते हुए उत्पादकों ने इसका उत्पादन बढ़ा दिया। यह गणना की गयी है कि 1515 से 1607 के बीच मालाबार क्षेत्र में काली मिर्च का उत्पादन 200 से 275 प्रतिशत तक बढ़ गया था। पुर्तगालियों के आगमन के पहले के उत्पादन का कोई लेखा-जोखा प्राप्त नहीं है अतः यह बताना या तुलना करना कठिन है कि काली मिर्च के उत्पादन में वस्तुतः कितनी बढ़ोत्तरी हुई। परन्तु यह बिना किसी हिचक के कहा जा सकता है कि पुर्तगालियों के आगमन के बाद काली मिर्च के उत्पादन में तेजी से वृद्धि हुई। परन्तु यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि मुगल साम्राज्य और सफवी साम्राज्य में काली मिर्च की मांग से भी भारत में इसके उत्पादन में बढ़ोत्तरी हुई होगी।

बोध प्रश्न 3

1) भारत के साथ पुर्तगालियों के व्यापार में विदेशी पूँजी निवेश की भूमिका का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

....

2) आज्ञा पत्र (cartaz) को परिभाषित कीजिए।

....

....

....

....

....

....

3) भारतीय समुद्री क्षेत्र पर पुर्तगाली किस प्रकार अपना एकाधिकार स्थापित कर सके।

....

....

....

....

....

....

4.6 सारांश

इस इकाई को पढ़कर आप समझ गये होंगे कि पुर्तगालियों के आने के बाद किस प्रकार एशिया और खासकर भारत के व्यापार जगत में परिवर्तन आया। अब तक समुद्री व्यापार सबके लिए खुला था, परन्तु अब पुर्तगालियों ने एकाधिकार की मांग की और अपने एकाधिकार की रक्षा के लिए कारखाने और किले स्थापित किए। पुर्तगालियों ने अन्य व्यापारियों के जहाजों के लिए आज्ञा-पत्र लेना अनिवार्य कर दिया अन्यथा वे उनका जहाज जब्त कर लेते थे। सोलहवीं शताब्दी के पहले ऐसा कभी न सुना न देखा गया था। भारत के तटीय प्रदेशों में अपने को स्थापित करने के बाद मसाले के व्यापार से पुर्तगालियों ने खूब मुनाफा कमाया। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के इतिहास में पहली बार भारतीय राजाओं के साथ वाणिज्यिक संधियां की गयीं। मांग को देखते हुए नगदी फसलों, खासकर मसालों का उत्पादन तेजी से बढ़ा। इस बात पर गौर करना चाहिए कि कृषि शुद्ध रूप से बाजारोन्मुख थी और इसका रुख अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के अनुकूल था।

4.7 शब्दावली

क्रूसेडो : पुर्तगाली सोने का सिक्का : 390 **रेइस** = 1 **क्रूसेडो**; रेइस (अंग्रेजी शब्द **रियल** का बहुवचन) यह पुर्तगाली मुद्रा की इकाई थी; आजकल 1000 **रेइस** = 1**एस्कूडो** (पुर्तगाली सिक्का) है।

डूकाट : एक इतालवी सिक्का; एक सोने का **डूकाट** अकबर के चार चांदी के रुपये के बराबर था, जबकि चांदी **डूकाट** अकबर के दो चांदी के रुपये के बराबर था।

कारखानेदार : अंग्रेजी में इसे "फैक्टर" कहते थे। यह "कारखाने" या "फैक्ट्री" का मुख्य पदाधिकारी होता था।

कारखाना : यह एक वाणिज्यिक संगठन था जिसका अपना स्वायत्त आस्तित्व होता था। स्थानीय शासक की आज्ञा मिलने पर विदेशी व्यापारी या शासक कारखाना स्थापित करते थे।

जमोरिन : कालीकट के राजा की पदवी (संभवतः समुद्र राय का अपभ्रंश)

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) वाणिज्यिक संगठन के रूप में कारखाने की अवधारणा और ऐसे कारखाने में फर्क है जहां उत्पादन होता है। कारखाना मात्र किसी देश का वाणिज्यिक प्रतिनिधि नहीं बल्कि इससे कुछ ज्यादा हुआ करता था (देखें भाग 4.2)।
2) किलाबंद कारखानों के महत्व का उल्लेख कीजिए (देखिए भाग 4.2)।
3) इस बात की परीक्षा कीजिए कि किस प्रकार पुर्तगाली मालाबार से धीरे-धीरे उत्तर-पश्चिमी और पूर्वी तट की ओर बढ़े। इसके साथ-साथ उनकी पूर्वी और पश्चिमी बस्तियों के अंतर को भी विश्लेषित कीजिए (देखिए भाग 4.2)।

बोध प्रश्न 2

1) देखिए भाग 4.3 यह मुख्य रूप से उनके भोजन से संबद्ध है।
2) देखिए उपभाग 4.3.1, 4.3.2, 4.3.3, 4.3.4

बोध प्रश्न 3

1) देखिए उपभाग 4.4.1 इसका उत्तर देते हुए बताइए कि क्यों पुर्तगाली राजा ने विदेशी व्यापारियों को पूर्व में व्यापार करने की इजाजत दी।

2) देखिए भाग 4.5
3) देखिए उपभाग 4.5.1 आज्ञा-पत्र सैन्य शक्ति तथा जहाज़रानी की भूमिका का पुर्तगाली व्यापारिक एकाधिकार की स्थापना के संदर्भ में वर्णन कीजिए।

स्रोतों पर एक टिप्पणी

स्रोतों पर यह हिस्सा खासकर इसलिए दिया गया है ताकि आप अपने अध्ययन काल के भारतीय इतिहास के प्रमुख स्रोतों की जानकारी हासिल कर सकें। इस काल के अनेक स्रोत समकालीन पुस्तकों, साहित्यिक रचनाओं और पुरातात्विक अवशेषों, शिलालेखों और सिक्कों के रूप में काफी मात्रा में विद्यमान हैं। यहाँ हम अपना ध्यान केवल साहित्यिक स्रोतों पर केंद्रित करेंगे जो प्रमुखतः फारसी भाषा में प्राप्त होते हैं। इसके अलावा राजस्थानी, मराठी, बंगला आदि भारतीय भाषाओं के स्त्रोतों में भी समकालीन स्थिति का वर्णन मिलता है। इसी समय पुर्तगाली, अंग्रेज, फ्रांसीसी और डच आदि यूरोपीय भारत के दृश्य पटल पर उपस्थित हुए। इस काल की भारतीय परिस्थितियों के संबंध में उन्होंने अपने अनुभव और विचार व्यक्त किए हैं, यह भी महत्वपूर्ण स्रोत हैं। यहां हम इनमें से उन कुछ प्रमुख समकालीन स्त्रोंतों के विषय में जानकारी दे रहे हैं जो आपके लिए महत्वपूर्ण हैं।

फारसी स्त्रोत

फारसी भाषा में लिखित स्रोत प्रशासनिक और लेखा नियमावली, संख्यिकी-तालिकाओं, प्रशासनिक विवरणों (**फरमान, निशान, परवाना** आदि), पत्र-लेखन (**पत्र, इंशा**-साहित्य) ऐतिहासिक और भौगोलिक लेखन, शब्दकोश (समकालीन) आदि के रूप में मिलते हैं। पर यहां हम मुख्य रूप से चुने हुए ऐतिहासिक लेखन पर ही विचार करेंगे।

इनमें सबसे प्रमुख बाबर के संस्मरण **बाबरनामा** है। यह मूल रूप में चगताई तुर्की भाषा में लिखा गया था। इसमें बाबर के जन्म 1483 से 1529 तक की घटनाओं की जानकारी मिलती है।

दूसरा प्रमुख ग्रंथ **हुमायूँनामा** है। इसे अकबर के शासनकाल में बाबर की बेटी गुलबदन बेगम ने लिखा था। इसमें मुख्य रूप से बाबर और हुमायूं के शासनकाल का जिक्र है। **तोहफा-ए अकबर शाही (तारीख-ए शेरशाही)** भी एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसे अकबर ने 1586 के बाद तैयार करवाया था। इसके लेखक अब्बास खां सरवानी थे। इसमें शेरशाह के जीवन और कार्यों का उल्लेख हुआ है।

अब्दुल कादिर बदायूंनी की रचना **मुंतखब-उततवारिख** अकबर के शासन की एकमात्र ऐसी रचना है जो अकबर को समर्पित नहीं है। इसमें बदायूंनी ने अकबर की विधर्मिता और "नवीनता" के लिए उसकी जमकर आलोचना की है। प्रथम खंड में सुबुक्तगीन से लेकर हुमायूं तक का इतिहास शामिल है। यह खंड राजनैतिक इतिहास पर प्रकाश डालता है। दूसरे खंड में अकबर के प्रथम चालीस वर्षों के शासन की घटनाओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया है। तीसरे खंड में उसने अकबर के काल के **मशायक (सूफियों) उलेमा**, चिकित्सक और कवियों की जीवनियाँ लिखी है। **अकबरनामा** में जिन महत्वपूर्ण तथ्यों को शामिल नहीं किया गया है उनमें से कुछ **मुंतखब (महज़र** आदि) में मिलते हैं।

अबुल फज़ल का **अकबरनामा** अकबर के शासन काल के दौरान लिखा गया अमर ग्रंथ है। इसके तीन खंड हैं, प्रथम दो खंड ऐतिहासिक विवरण प्रदान करते हैं और तीसरा खंड **आइन-ए अकबरी** है। प्रथम खंड में आदम के जमाने से लेकर अकबर के शासनकाल के प्रथम सत्रह वर्षों का उल्लेख है। दूसरे खंड में अकबर के शासनकाल के 46वें वर्ष तक का लेखा जोखा है। तीसरे खंड **आईन-ए अकबरी** साम्राज्य के विभिन्न विभागों, शाही टकसाल, खाद्य पदार्थ और वस्तुओं की कीमतों, सुलेखन, और चित्रकला, शास्त्रागार, शाही अस्तबलों, आदि का विवरण है। इसमें विभिन्न राजस्व और प्रशासनिक पदाधिकारियों के कार्यों के विषय में भी जानकारी मिलती है। इसमें विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक और दार्शनिक बातों की भी चर्चा है। हमें विभिन्न वस्तुओं की कीमतों के बारे में भी जानकारी मिलती है। **आईन** में अकबर के साम्राज्य के समय के **सूबों, सरकारों** और **परगनो** के विवरण, भूमि की माप, राजस्व की दरों, अनुमानित राजस्व आय तथा सैनिकों की संख्या आदि की विस्तृत तालिकाएं मिलती हैं।

जहांगीर द्वारा लिखित **तुजुक-ए जहांगीरी** में जहांगीर के शासनकाल के प्रथम 19 वर्ष के संस्मरण हैं, इससे

जहांगीर के शासनकाल की जानकारी मिल जाती है। मौतमद खां का **इकबालनामा-ए जहांगीरी** (1632 के बाद) जहाँगीर के काल का अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथ है।

शाहजहां के शासनकाल में उसके शासन का इतिहास लिखने के लिए तीन इतिहासकार नियुक्त किए गए। अमीन कज़वीनी ने प्रथम दस वर्षों का इतिहास लिखा। इसके बाद अब्दुल हमीद लाहौरी को यह जिम्मा सौंपा गया जिसने शाहजहां के शासनकाल के प्रथम बीस वर्षों का इतिहास पूरा किया। इसके बाद मौहम्मद वारिस ने 21वें से 30वें शासकीय वर्ष तक का इतिहास लिखा। इन तीनों खंडों को **बादशाहनामा** के नाम से जाना गया। शेख फरीद भक्खरी का **ज़खीरत-उल खवानीन** अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथ है जिसमें अकबर से लेकर शाहजहां तक के शासनकाल के अमीरों (कुलीनों) की जीवनियां प्रस्तुत की गयी हैं।

औरंगजेब के शासनकाल के प्रथम दस वर्षों का इतिहास हमें मौहम्मद काज़िम द्वारा संकलित सरकारी ऐतिहासिक ग्रंथ **आलमगीरनामा** (1668) से प्राप्त होता है। इसके बाद औरंगजेब ने सरकारी इतिहास लेखन की परंपरा बंद करवा दी। परन्तु अन्य समकालीन स्रोतों से इस काल की काफी सूचनाएं प्राप्त हो जाती है। औरंगजेब के शासनकाल में लिखी जाने वाली महत्वपूर्ण रचनाएं हैं खाफी खां की **मुंतख़ब-उल लुबाब**, ईश्वर दास नागर कृत **फुतुहात-ए आलमगीरी** (प्रथम से चौतीसवें शासन वर्ष तक), साक़ी मुस्तैद खां की **मासिर-ए आलमगीरी** (1710-11), भीमसेन की **नुस्ख़ा-ए दिलकुशा** (1708-9)।

राजस्थानी स्रोत

राजस्थानी भाषा में काफी संख्या में स्रोत सामग्री उपलब्ध हैं जो मध्यकालीन भारत विशेषकर-राजस्थान पर प्रकाश डालते हैं। इनमें सबसे प्रमुख मुहता नैनसी का **मारवार रा परगना री विगत** (लगभग 1666) और उसकी **ख्यात** (1667 के बाद) है। काफी हद तक उपेक्षित बनारसी दास जैन का **अर्द्धकथानक** मुगल इतिहास का महत्वपूर्ण स्रोत है। श्यामल दास की **वीर विनोद** (जो बाद में लिखी गई है) में महत्वपूर्ण समकालीन सूचनाओं और तथ्यों का उल्लेख है।

यूरोपीय स्रोत

समकालीन पुर्तगाली, फ्रांसीसी, डच और अंग्रेजों के लेखन से उस समय के भारतीय जीवन के विभिन्न पहलुओं पर काफी प्रकाश पड़ता है। इस प्रकार की सूचनाएं दो रूपों में उपलब्ध हैं। पहला है: संस्मरण, यात्रा वृतांत और पत्रों के (धर्म प्रचारकों के) रूप में। दूसरा है—उनकी कंपनियों और फैक्ट्रियों के रिकार्ड। एंतोनियो मॉनसरेट नामक एक इसाई धर्म-प्रचारक ने पुर्तगाली में एक **कमेंट्री** लिखी है (1597), जिससे अकबर के दरबार का जीवंत ब्यौरा प्राप्त होता है। सर टामस रो (**एम्बेसी** 1615-19) का ग्रंथ जहाँगीर के काल की राजनीति और अर्थव्यवस्था का वर्णन प्रस्तुत करता है। डच अधिकारी पेल्सार्ट का संस्मरण (**रिमांस्ट्रैंट**) एक संक्षिप्त परन्तु बहुत महत्वपूर्ण विवरण प्रदान करता है। पीटर मंडी (1628-34) और सेबेस्टियन मैनरीक (1629-43) के यात्रा संस्मरणों से शाहजहां के शासनकाल की महत्वपूर्ण सूचनाएं प्राप्त होती हैं। औरंगजेब के जमाने के यूरोपीय स्रोत काफी मात्रा में मिलते हैं। फ्रेंसिसको बर्नियर (1656-68) ने अपने यात्रा विवरण में आगरा और दिल्ली का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। इसमें मुगल साम्राज्य के राजस्व स्रोतों आदि का भी विस्तृत उल्लेख है। निकोलाओ मानुक्की (1656-1712) के ग्रंथ **स्टोरिया डो मोगोर** से भी औरंगज़ेब के शासनकाल से संबंधित काफी विवरण प्राप्त होता है। वह सामूगढ़ की लड़ाई में उपस्थित था। अतः उत्तराधिकार के युद्ध पर उसका लेखन बहुत उपयोगी है।

इसके अलावा कारखानेदारों के दस्तावेजों (**फैक्ट्री रिकॉर्ड्स**) से भी मुगल साम्राज्य के बारे में काफी जानकारी मिलती है। इसी प्रकार डच ईस्ट इंडिया कंपनी के रिकार्ड डच अभिलेखागार में भी उपलब्ध हैं। यह रिकार्ड काफी उपयोगी हैं और समकालीन व्यापारिक और वाणिज्यिक गतिविधियों को समझने में बड़े उपयोगी हैं।

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

आर.पी. त्रिपाठी : **मुगल साम्राज्य का उदय और अस्त**

प्रो. एच.के. शेरवानी एवं डॉ. पी.एम. जोशी : **History of Medieval Deccan 2 vols.**

ए.बी. पाण्डेय : **The First Afghan Empire in India**

के. एल. मैथ्यू : **Portuguese Trade with India in the 16th century**

डॉ. के. ए. नीलकंठशास्त्री : **दक्षिण भारत का इतिहास**

16वीं शताब्दी में भारत	(अनु.) वीरेन्द्र वर्मा		
	एच. सी. वर्मा	:	**मध्यकालीन भारत (केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय)**
	अवध बिहारी पांडे	:	**उत्तरमध्य कालीन भारत**